महाऋक्ष महर्षिवाल्मीकि

भारती विद्या मनीषी
पंडित अनन्त शर्मा

हम लोग वाल्मीकि जी के वास्तविक नाम तक को नहीं जानते हैं। वाल्मीकि उनका नाम नहीं है, ये उनका परिचय है। क्यों कि उनके पिता का नाम वल्मीक है। उस पिता की सन्तान होने से वो कहलाते हैं वाल्मीकि। दूसरा नाम भी तो है भार्गव। मैंने कहा भार्गव और ज्यादा पुराना हो गया। भृगु वंश को चलाने चाले भृगु जो है उनके कुल में पैदा हुए हैं तो भार्गव हो गये। चलिए से भी काम हो गया। अब प्रश्न है वैसे और भी नाम है आप घबराईये मत। प्राचीनता से नाम है। मैं प्राचीनता से और भी दूर हो गया। भृगु को जन्म देने वाले वरुण। वरुण का नाम है प्रथेयता। तो प्रथेयता के पुत्र होने से जो प्राथेयज है। इस प्रकार से बाल्मीकि अपने पिता के नाम से, भार्गव अपने वंश के प्रवर्तक के नाम से और प्रथेयता वाल्मीकि का वो नाम है जो उनके मूल पुरुष वर्ग के नाम से हुआ है। अब कहाँ बदले वाल्मीकि का नाम। जब हम इतने वर्षों बाद भी वाल्मीकि का नाम तक नहीं जानते है तो उनका निजी नाम तो कुछ होगा। क्यों कि आप जैसे राघव बोलें या केवल राम ही है।

दशरथ जी राघव आ जायेगा। दशरथ ही नहीं आयेंगे दशरथ के पिता अज भी आ जायेंगे। रघु के पुत्र अज है। अज के पुत्र दशरथ है। दशरथ के पुत्र राम है। राम और राम के भाई और राम की सन्ततियाँ ये सब राघव में आ जायेंगे। तो वाल्मीकि को हम भार्गव कहे और प्राथेतस कहें तो सैकड़ों महापुरुष आ जायेंगे। एसी अवस्था में हम वाल्मीकि को अपने निजी नाम से क्यों कि इनके माता पिता ने इनका नाम तो रखा ही होगा ना। भारतीय परम्परा में नाम रखे जाते हैं। ये हुआ उनके निजी नाम का प्रश्न। दूसरे आफ्ने वल्मीकि नाम तो ले लिया। वल्मीक किसका नाम है। जिसे वास्तव में उनके पिता का नाम कहा जाये। ये प्रश्न है। वैसे वाल्मीकि शब्द हमारे लिए प्राचीन काल में अपरिचित नहीं है। गरुड़ की जितनी संतानें है उनमें जो प्रमुख सन्तान हैं उनमें एक का नाम है वाल्मीकि।

इसका मतलब गरूड़ के और वाल्मीकि के बीच में भी वल्मीक नाम का कोई व्यक्ति है। जो वाल्मीकि है। ऐसे ही यहाँ वल्मीक नाम के व्यक्ति हैं। उनका अपना निजी नाम भी है। जिससे उनको पुकारा जाता था। ठीक। तो हम कहते हैं

कि ये भी एक प्रश्न सा है वास्तव में कि ना तो हमें वाल्मीकि के पिता का नाम ज्ञात है। ना स्वयं वाल्मीकि का वास्तविक नाम ज्ञात है। और हम भगवान् वाल्मीकि - वाल्मीकि कहते है। तीसरी बात और देखिए वाल्मीकि को हम लोग आदि कवि बोलते हैं। आदि कवि का अर्थ है वह व्यक्ति जो सबसे पहला कवि है। इसका मतलब वाल्मीकि से पहले कोई कवि होते ही नहीं थे। कवियों के लिए पद प्रतिष्ठा कवियों की परम्परा को डालने वाले वाल्मीकि हैं। ये तो उनका शुभ नाम है। वाल्मीकि का नाम नहीं है आदिकवि।

जब इतनी रसिकता में मुझे वाल्मीकि नाम पसन्द है, भार्गव नाम पसन्द है, प्राथेतस नाम भी पसन्द है और उसी के साथ साथ कवि नाम भी पसन्द है। मैं मनचाहे नाम का प्रयोग करके उनके प्रति अपनी श्रद्धा को अपनी आस्था में बता सकता हूं। पर उसका ये अर्थ नहीं है कि, वाल्मीकि के नाम का परिचय हो गया। और वल्मीक के नाम का परिचायक हो गया। तो ऐसी स्थिति में हमें सोचना पड़ेगा कि हम उनके नाम को ढूंढ़ें। पिता का नाम क्या है। जब वाल्मीकि नाम हमारे सामने आया, पिता का नाम है, कवि नाम भी है फिर भी कुछ नाम नहीं है। जहां तक कवि शब्द का प्रश्न है वाल्मीकि के लिए कवि इतने गौरव का शब्द है कि हमारी संस्कृत के किसी कवि ने अत्यन्त प्राचीन काल में एक सुन्दर बात कही है - जिस व्यक्ति की वाल्मीकि के प्रति अगाध श्रद्धा है। जैसे कक्षाओं में बच्चे को समझाते है जो कवि शब्द है जब हम कवि शब्द के पद बनायेंगे एक कवि,दो कवि, तीन कवि। तो संस्कृत में एक के लिए आयेगा कविः, दो होंगे तो 'कवी' अनेक हो जायेंगे तो कवयः। तो उस व्यक्ति ने जैसे अपनी कक्षा में बालकों को पढ़ा रहे हों वैसे कहा देखो कवि शब्द कहाँ से आया। तो देखो - **" जाते जगति वाल्मीकौ, कतिः यत् गिरा भवतु।**

संसार में जब वाल्मीकि ने जन्म लिया तब सबसे पहला नाम चला कवि। इससे बड़ी वाल्मीकि की क्या पूजा होगी जिसने कवित्व का जन्म ही वाल्मीकि से प्रारंभ किया। फिर एक प्रश्न आया कि क्या केवल वालूमीकि ही एक कवि थे। ऐसा नहीं है। वाल्मीकि के बाद भी कवि हुए हैं पर बहुत समय बाद हुए हैं। वे है भगवान् व्यास। अब एक कवि तो कविः और दो कवि हैं तो कवी। अब भगवान् व्यास के होते ही कवि शब्द का अगला शब्द बना कवी। तो क्या फिर वहीं समाप्त। नहीं फिर तो कवि हुए है। कौन हुये है। हमारे दण्डी। संस्कृत का बहुत अच्छा गद्यकार हुआ है और जिस व्यक्ति को उसके प्रति आस्था है। अब अपना श्लोक पूरा हो जाता है- **जाते जगति वाल्मीकौ कविः यत्यजा भवत।**

जब संसार में वाल्मीकि का अवतार हुआ उस समय कवि नाम हमारे सामने आया। वो पहला ही शब्द था इसलिए हम कवि ही बोलते थे। जब कुछ समय बाद भगवान् वेदव्यास जी का जन्म हुआ तो दो कवी हो गये। तो कविः

और कवी और फिर दण्डी। आज हम बड़े गौरवशील है कि हमें कवि शब्द का बहुवचन मिला कवयः। इस प्रकार से ये वाल्मीकि को श्रद्धा देने वाले रूप है। हमारे आज के विद्वान जिन्हें विद्वान कहना पड़ता है क्यों कि सभी लोग विद्वान् मानते हैं तो हैं जो वाल्मीकि के वैभव को , वाल्मीकि के गौरव को , वाल्मीकि की गरिमा को नष्ट करने वाले हुए हैं। क्यों ? क्यों कि इन लोगों ने कवि शब्द को सामान्य अर्थ में कर दिया। जिसकी खूब गहरी उड़ान हो वो कवि है। एक कहावत भी दुनिया में प्रसिद्ध है- **जहाँ न पहुंचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि।'** तो जहाँ सूर्य का प्रकाश भी नहीं पहुंच पाता वहाँ कवि पहुंच जाता है। तो ये कवि क्या सिवाय कल्पना के हैं ?

वाल्मीकि भी ऐसे ही कल्पनाशीत कवि होगा। अब वाल्मीकि के रामायण को लेकर के जिस प्रकार की ऊट-पटांग बातें रामायण में लिखी हैं तो वाल्मीकि जैसे व्यक्ति के सामने रामायण का नाम लें तो ऐसा लगे मैंने भगवान् राम का जो पावन चरित्र दुनिया के सामने रखा है उसको लोग किस प्रकार से कवि शब्द ले रहे हैं। तो निश्चित रूप से वाल्मीकि का एक - एक नाम इतना सार्थक है और हम लोग अपने आज के कवियों के खेल को देखकर के कवियों के बाल्मीकि का आदर कर रहे हैं। वाल्मीकि की जय-जयकार कर रहे हैं। रामायण के पहले रचयिता वाल्मीकि हैं ये मान रहे है। हमारे महाराज वाल्मीकि की धज्जियां उड़ा रहे हैं।

आपको आश्चर्य होगा जैसे भगवान् वेदव्यास एक व्यास हैं। ऐसे ही वाल्मीकि भी एक व्यास हैं। आज कई लोगो को आश्चर्य होगा कि व्यास अनेक हुये है। अगर कभी हम व्यास के विषय में पढ़ते तो पता चलता कि ये जो कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास है ये २८वें व्यास हैं। वाल्मीकि २४वे व्यास हैं। इसका मतलब है वेद व्यास से चार पीढ़ी पहले जो और व्यास थे उनमें पुराण कहता है - **ऋक्षो भूत भार्गवः तस्मात् वाल्मीकि वियो विधीयते।"**

ये जो किनबिन्दु कर के व्यास हुये थे 23वें क्रम पर उनके बाद व्यासत्व लिया है भगवान् वाल्मीकि ने। वाल्मीकि जिनका नाम है ऋक्ष। जो अपूर्व है। यहां ऋक्ष कोई और भी तो हो सकता है। तो कहा नहीं- ऋक्षो भूत भार्गवः वो भी।भृगुवंशी वाल्मीकि ऋक्ष है। अगर फिर भी किसी को भ्रम हो तो उसने कितना हमारा उपकार किया है - वाल्मीकियो विधीयते । जो संसार में वाल्मीकि के नाम से मशहूर है, जो भृगुवंश के महान् पुरुषों में है वो भार्गव वाल्मीकि जिसका नाम है- ऋक्ष । और " ऋक्षो भूत भार्गवः तस्मात् । उस किनबिन्दु के बाद में 24वां व्यास। वाल्मीकि २४ है, तो वाल्मीकि के बाद में जो व्यास बना है उसका नाम है शक्ति। वह है 25वां। वो भगवान् वशिष्ठ का पौत्र है। शक्ति का पुत्र है पराशर। ये भगवान् वेदव्यास के पिता हैं। पराशर के भाई हैं जतुकर्ण। ये वेदव्यास के चाचा हैं। वेदव्यास के गुरु वास्तव में इनके चाचा ही रहे हैं। सारे वेदों की शिक्षा उन्होंने ही दी है।

तो यहाँ पर, २५, २६, २७,२८ चार तो ये और उससे पहले वशिष्ठ । पांच व्यास तो येही हो गये। अब सोचिये व्यास की कितनी बड़ी आवश्यकता थी और किस समय समाज ने व्यास को जन्म दिया पर वास्तव में व्यासत्व के विषय में ज्ञान न होने से आज तक व्यास का नाम हम लोगो ने बदनाम कर दिया है। तो वाल्मीकि का नाम है ऋक्ष। ध्यान दीजीये- पहला नाम है ऋक्ष, दूसरा नाम है जो निकटतम है वो है वाल्मीकि , तीसरा नाम है भार्गव, चौथा नाम है वंश की दृष्टि से प्राथेतस और पाँचवां नाम है उनकी कुल की गरिमा के अनुसार कवि। इस प्रकार पाँच नाम हमारे सामने वाल्मीकि के आये।

प्रश्न फिर से पैदा हो जाता है कि गरुड़ की सन्तानों में भी कोई वाल्मीकि है तो वाल्मीकि का पिताजी कोई वल्मीक रहा होगा तो क्या ये वल्मीक और वो वल्मीक एक ही होगा। ये वल्मीक कौन है। हमने आज तक वल्मीक व पता लगाने की चेष्टा नहीं की। भूल गये कि वल्मीक कौन है। आपको भगवान् वाल्मीकि इनके पिता वल्मीक, अर्थात् जिनका वल्मीक नाम है उन व्यक्ति का परिचय देते हैं। और वो है ऋषि च्यवन। च्यवन के पुत्र वाल्मीकि हैं।

च्यवन शब्द का अर्थ क्या होता है तो - च्यवन अपने आप में एक विशेष शब्द को बताता है। जब च्यवन ऋषि बोलते हैं तो मानो ऋषियों में श्रेष्ठ ऋषि ऐसे अर्थ निकल जाते है। च्यवन सामान्य व्यक्ति नहीं थे। हमें च्यवन नाम किसने दिया आपको मालुम है।आपने महान् कवि अश्वघोष का नाम सुना होगा। यह एक बौद्ध व्यक्ति था। इसने भगवान् बुद्ध का एक चरित्र काव्य लिखा। जो बुद्ध चरित के नाम से है। उस बुद्ध चरित के आधार पर हमें पता चलता है कि च्यवन कौन था। कैसे ? जब बुद्ध का जन्म हुआ तो हमारे यहाँ पुरानी परम्परा रही है आज भी सामान्य है कि हम पहले किसी ज्योतिषी को बुलाते है और पूँछते है कि इसकी जिन्दगी कैसी निकलेगी। तो ऐसे ही जैसे सिद्धार्थ का जन्म हुआ तो पिताजी ने बुलाया और उनके सामने ज्योतिषी बैठे और बताया कि यह ये करेगा, वो करेगा और आज तक जो पूर्वजों ने नहीं किया ये वो काम करेगा।

राजा ने वैसे ही टोक दिया कि ऐसा भी संभव है कि पूर्वजों ने किसी ने भी कोई ऐसा व्याक्ति पैदा हो जायेगा। महाराज कैसे नहीं होगा। वहाँ अश्वघोष ने उन लोगो की बड़ी सूची पैदा करदी कि जिस विद्वान् ने काम नहीं किया। तो वहाँ कहते हैं- **जग्रन्थ यन्नः च्यवनो महर्षिः '**

इन्द्र ने कहा तुम बलात् कहते हो तो मैं इसे खत्म ही कर देता हूँ। उसने वज्र चलाना चाहा तो च्यवन ने रूक जाओ कह कर इन्द्र के वज्र को बाँधा। वो च्यवन वाल्मीकि के पिता थे। मैं बार - बार ये कहना चाहता हूं वाल्मीकि और इनके पिता इनके तेजस्विता को उनकी तपस्याओं को हम लोग याद रखें। उन्हें कवि मानकर के और आज तक जिस प्रकार

के भाट जिस प्रकार से लोगों की प्रशंसा करते हैं उन कवि के रूप में विकल्प वाल्मीकि रामायण को मत रखो। ये हमारा वाल्मीकि के प्रति बड़ी श्रद्धा का प्रश्न हुआ। वाल्मीकि कितने प्राचीन से इसका छोटा सा पता इससे चल जागेगा कि मैं वाल्मीकि की पीढ़ी के नाम आपके सामने लेता हूँ। यहां से भगवान् ब्रह्मा। ब्रह्मा के सात पुत्रों में भृगु एक हैं।

भृगु के पुत्र में च्यवन है, च्यवन के पुत्र में वाल्मीकि। अर्थात् ब्रह्मा के चौथी पीढ़ी में वाल्मीकि आ रहा है। अब ये वाल्मीकि जिसे हम कह देते हैं ये कोई डांकू था। अरे जिसने जिन्दगी ये शपथ ली है- जब सीता को बुलाया गया और कहा गया कि सीता तुम सबके सामने अपनी शुद्धता का परिचय दो। तब वाल्मीकि ने कहा- सीता क्या कहेगी मैं कहता हूँ - मैंने जिन्दगी भर जो तपस्या की है और जन्म से लेकर आज तक एक बार भी असत्य नहीं बोला है वो सीता सत्य की साक्षात् मूर्ति है। अगर सीता को इस प्रकार शुद्ध न माना जाये तो मेरा सारा मामला ही खत्म हो जायेगा। मुझे मेरे पुण्य मेरी तपस्या का कोई फल नहीं मिलेगा। तो इस प्रकार की प्रतिज्ञा करने वाला जो सीता के प्रति इतनी बड़ी वाजी लगा देता है और जब सीता पहली बार आश्रम में दिखाई देती है तो उसे अर्घ्य देता है जिस प्रकार हम देवताओं को देते हैं। उस वाल्मीकि की महत्ता को हम लोग समझें।

उस महत्ता को समझ कर के आगे- बढ़े। तब हमें पता चलेगा वाल्मीकि क्या से क्या नहीं थे? क्यों कि कहा गया तो मुझे ये था कि वाल्मीकि, रामायण और राम इन तीनों पर कहना है। मैंने कहा अकेले वाल्मीकि को हम पूरा कर लें, फिर वाल्मीकि की रामायण में आ जायेंगे और रामायण में जो भगवान् राम का चरित्र चित्रण है वो विश्व में अपने आप में अनूठा है। इसमें हम कुछ कह ही नहीं सकते हैं। वाल्मीकि के इन सारे कामों को हम देखते हैं। वाल्मीकि रामायण को हम देखते है तो कहते हैं आदिकाव्य। हम लोग नहीं समझते आदिकाव्य क्या है। वाल्मीकि ने अनुष्टुप् छन्द को जन्म दिया। हम ही समझते अनुष्टुप् ने जन्म क्या दिया और जो व्यक्ति इस प्रकार की बातें कर गया जिसे हम छन्द के विषय में नहीं समझते है, आदि काव्य के विषय में नहीं समझते हैं, कवि का अर्थ नहीं समझ सकते हैं।

उस वाल्मीकि के विषय में रामायण को लेकर जो नाना प्रकार की इतिहास में कल्पना करने वाला हमारा इतिहास लेखक वर्ग है तो वस्तुत: बहुत ही अधिक निन्दनीय है। उसने कभी इन विषयों के प्रति अपने प्राचीन अपने पूर्वजों के प्रति अपने विश्व की परम्परा में सर्वस्व स्थान रखने वाले विश्व गुरुत्व के महानुभावों के प्रति अपनी श्रद्धा का परिचय ही नहीं दिया। हम अपने पुराने सम्बन्धो को तोड़ नहीं सकते हैं।उनको जाने विना हम अपने गौरव की बात नहीं कर सकते हैं। आज भी आप ध्यान करिये भगत सिंह जैसा व्यक्ति महान् कोटि में आ जाता है जिसने हंसते- हँसते फाँसी ली है और अपने हाथ से डर रहा है। ऐसे महान् व्यक्ति क्या भुला देने लायक है। ये क्या हमारे पूर्वज नहीं है। क्या इनके एक एक गुण

हमारे लिए ग्राह्य नहीं है। ऐसे ही महान् व्यक्तियों को और समाज में आज तक हमारे सामने पहुँचा देने वाले राम जैसे कृष्ण जैसे व्यक्ति तक पहुंचा देने वाले वाल्मीकि और व्यास को हम सामान्य काव्य के साथ तुलना करके जब ऊटपटांग बातें उनके लिए कहते हैं ये इतना महान् घोर है। तो आज के दिन मैं यही कहना चाह रहा हूँ कि आप लोग भगवान् वाल्मीकि के इस स्वरूप को समझिए।

जो स्वयं हजारों वर्षों तक तप करने वाला एक महान् व्यक्ति है। उसके पिता जो स्वयं हजारों वर्षो तक तप करने वाले हैं, एक महान् व्यक्ति हैं। उसके जो दादा भृगु हैं जिनका सात ऋषियों में प्रथम नाम आता है और आगे ब्रह्मा जाते हैं। वो व्यक्ति वाल्मीकि बाद तक हमारे- सामने बना रहता है। आपको आश्चर्य होगा वाल्मीकि को देखकर के कि जिस वक्त भीष्म पितामह अपने प्राण छोड़ते है उस समय सारे महान् ऋषि वहाँ आ जाते हैं। उनमें वाल्मीकि भी एक थे। अब कहाँ भीष्म पितामह एक क्षत्रिय, एक वीर। पर हमने उसको एक क्षत्रिय एक वीर के रूप में नहीं देखा। हमने प्रचण्ड ज्ञानसूय के रूप में देखा। ज्ञानसूय में इन्ही की प्रशंसा को लेकर इनके आदर इनके सम्मान में लेकर के उस समय भगवान् वाल्मीकि वहां पहुँच गये थे। ऐसे और ले तो युधिष्ठिर।

युधिष्ठिर भगवान् शंकर का कितना बडा यश है तुम देखो उनकी पूजा करो। जो वाल्मीकि ने रामायण में राम का ग्रन्थ लिखा और हम लोग बेवकूफी में है आलोचना में बोल जाते हैं देखो सब देवताओं ने अवतार लिया शिव ने कोई अवतार नहीं लिया। रावण ही शिव का भक्त था तो वो कैसे अवतार लेते। मूर्खो रावण शिव भक्त कभी रहा ही नहीं। रावण ने ब्रह्मा की भक्ति की है सारे वरदान ब्रह्मा से प्राप्त किये हैं। शिव के ऊपर तो उसने बेवकूफी की है कि कैलाश को उठा दूंगा तो उसे पता चला कि शिव की शक्ति क्या है। आप कह रहे हो कि शिव ने अवतार नहीं लिया। हनुमान कौन है? रुद्रावतार माने जाते हैं। और राम के खास लोगों में है। तो इस द्रष्टि से हम वाल्मीकि को देखते हैं तो उनके अनेक रूप बहुपक्षीय इतने बनते हैं कि वाल्मीकि रामायण का एक-एक अक्षर अत्यन्त गौरव के साथ अत्यन्त महत्ता के साथ पढ़ने लायक है।